नीतीश मिश्रा
पूर्व मंत्री
बिहार सरकार

सदस्य
बिहार विधान सभा

Ref: 34/2021
Dt- 11-01-2021

कुलपति,

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

दरभंगा।

विषयः— **मिथिला संस्कृत स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध संस्थान, दरभंगा के मूलभूत सुविधा के उन्नयन एवं आधारभूत संरचना के निर्माण के संबंध में।**

महाशय,

संस्कृत के व्यापक प्रचार--प्रसार प्राच्य विद्या एवं संस्कृत के पुनर्जागरण की दिशा में भारतीय विद्या की विभिन्न शाखाओं में समुन्नत अनुसंधान एवं उच्च स्तरीय प्रकाशन के उद्देश्य से बिहार सरकार द्वारा 21 नवंबर, 1951 में मिथिला संस्कृत स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध संस्थान दरभंगा की स्थापना की गयी थी। भारत वर्ष के प्रथम राष्ट्रपति स्वनामधन्य महामहिम डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने तत्कालीन दरभंगा महाराजाधिराज डा0 सर कामेश्वर सिंह जी के द्वारा मानस्वरूप प्रदत्त 62 बीघे की विशाल भूखंड पर इस शोध–संस्थान के मुख्य भवन का शिलान्यास किया गया था।

मिथिला भूमि अपने बौद्धिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान से भारत वर्ष को हजारों वर्षों से प्रकाशित कर रही है, जो ज्ञानरूपी प्रकाशपूँज इस भूमि के द्वारा समस्त संसार को दिया गया है। उसके समान्य अन्य ज्ञानपूँज उसके समकक्ष पुर्ती हेतु कहीं भी उपस्थित नहीं होता है। इस संस्थान का उद्देश्य प्राचीन मनीषियों के गंभीर ज्ञान तथा अर्वाचीन शोध प्रज्ञो की नवीन प्रतिभा के संगम, शोधार्थियों को नवीन वैज्ञानिक एवं तकनीकी शोध प्रक्रिया से अवगत कराना, संस्कृत को उत्कृष्ट रूप में प्रचलित करना, संस्कृत के नव शोधार्थियों तथा प्राच्य विद्या के मूर्धन्य विद्वानों को राशि उपलब्ध कराना, जिसके माध्यम से संस्कृत जगत में एक नयी दशा–दिशा परिलक्षित हो।

पूर्व में संस्थान की संबद्धता तत्कालीन बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर (वर्तमान बी.आर. अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुज0) से थी, जो परीक्षार्थियों एवं शोध गवेषकों को उपाधि प्रदान करता था। वर्तमान में 1973 से इसकी संबद्धता ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा से प्राप्त है। वर्तमान समय में संस्थान से संस्कृत परा–स्नातक एवं पीएच.डी. एवं डी.लिट के उपाधि प्रदान की जाती है। संस्थान के अंतर्गत शोधार्थियों ने कई महत्वपूर्ण शोध कार्य किये है। संस्थान के द्वारा उच्च स्तरीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के शोध के साथ साथ–साथ स्थायी महत्व के पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य भी किया गया है। संस्थान में संस्कृत पाण्डुलिपि का संग्रह बिहार राज्य में सबसे ज्यादा है। कुछ ऐसी दुलर्भ पाण्डुलिपि यहाँ उपलब्ध है, जो कि भारत वर्ष में कहीं अन्यत्र उपलब्ध नहीं है।

वर्तमान समय में संस्थान के विकास में संस्थान के निदेशक ने अपने सहयोगियों के साथ कई सार्थक प्रयास किए है, परन्तु संस्थान में पाण्डुलिपि चोरी की घटना, शिक्षण कार्य हेतु शिक्षकों की कमी, मूलभूत सुविधाओं का अभाव एवं बाढ़ के कारण क्षति पहुँची है। पूर्व के विद्वानों ने संस्थान को एक स्वतंत्र विश्वविद्यालय के रूप में जो स्वप्न देखा था, उसका मार्ग प्रशस्त करने की आवश्यकता है।

अतः अनुरोध है कि मिथिला संस्कृत स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध संस्थान दरभंगा की मूलभूत संरचना के उन्नयन एवं आधारभूत संरचना के निर्माण हेतु समुचित कार्रवाई करना चाहेंगे, ताकि यह संस्थान राज्य स्तर पर ही नहीं, विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित हो सकें।

नव वर्ष की मंगलकामनाओं के साथ!

भवदीय

Nitish Mishra

(नीतीश मिश्रा) 11.1.2021

112, कौटिल्य नगर, पटना 800014
Tel. : 0612 222 6263 Fax : 0612 222 5218 E-mail : nitishmishraoffice@gmail.com